आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव'

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸ 13 अंक ▸ 166 मुद्रण तारीख ▸ 1 अक्टूबर, 2025 कुल पृष्ठ ▸ 24

झिलमिलाते दीपों की रोशनी से प्रकाशित ये दीपावली आपके घर में सुख-समृद्धि और आशीर्वाद लेकर आए

शुभ दीपावली

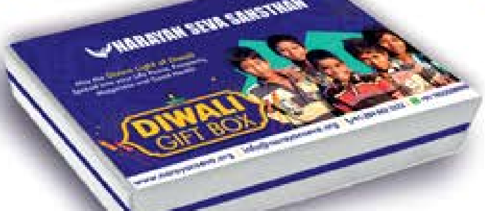

आइये इस बार मनाएं

हर घर खुशियों की दिवाली

इस दिवाली लाएं किसी मासूम के चेहरे पर मुस्कान

Narayan Children Academy

A Unit of Narayan Seva Sansthan

शिक्षा का संसार हर बच्चे का अधिकार

— हम सब मिलकर संवारें गरीब बच्चों का जीवन —

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Donate via UPI
narayanseva@sbi
www.nca.org.in

सेवा सौभाग्य

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸ 13
अंक ▸ 166 कुल पृष्ठ ▸ 24

मुद्रण तारीख ▸ 1 अक्टूबर, 2025

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva
Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222
वाट्सऐप: +91-7023509999
Web ▸ www.spdtrust.org
E-mail ▸ info@spdtrust.org

Seva Soubhagya
Print Date 1 October, 2025
Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404
Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 24 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

आशा और आत्मनिर्भरता की रोशनी उम्मीदों के बीच ज्योति को नई ज्योति

06

सपनों को पंख, निःशुल्क विवाह

07

सिलाई से बुनी नई पहचान

08

कृत्रिम अंग वितरण

14

झीनी झीनी रोशनी - 77

16

19

सेवा -संकल्प व समर्पण के 40 साल का सफर

आज भी हमारे देश में असंख्य भाई-बहन शारीरिक रूप से अक्षम हैं, नि:शक्त हैं। प्रति दिन हादसों में हजारों लोग अपने हाथ-पांव खोकर बेजारी की जिन्दगी जीने को मजबूर हैं। निराश्रित और निर्धन जन भी अपनी बुनियादी जरूरतों के साथ एक सामान्य व्यक्ति की भांति जिदंगी को भरपूर जीना चाहते हैं। आपके सहयोग व मार्गदर्शन में संस्थान ने उनके लिए ऐसे प्रकल्पों को साकार किया किया है, जिनसे आज वे खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जिसका जन्म अथवा उद्‌भव हुआ है, उसे एक दिन काल के अनंत प्रवाह में विलीन होना ही है। जन्म–मृत्यु के इस चक्र में वे लोग शिलालेख बन जाते हैं, जो जन्म के उद्देश्य को जानकर उसे हासिल कर लेते हैं। हमारे ऋषि–मुनि, महापुरुष और अपने–अपने कार्य क्षेत्र में उपलब्धियों का इतिहास रचने वालों ने इस लिए अमरत्व पा लिया– क्योंकि वे दूसरों के लिए भी जीते हुए प्रेरणा के स्त्रोत बने।

बात सन् 1980 के दशक के मध्य की है, तब पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव' डाक–तार विभाग के लेखा विभाग में कार्यरत थे। माता–पिता से मिले संस्कारों से उनमें गरीब व जरूरतमंदों की सेवा का जज्बा तो बचपन से ही था किन्तु दो ऐसी घटनाओं के वे प्रत्यक्षदर्शी रहे, जिनसे उनके जीवन का ध्येय ही समाज सेवा बन गया। जब वे सिरोही में पोस्टेड थे, तभी पिण्डवाड़ा के निकट एक हृदय विदारक बस–ट्रक दुर्घटना में कई लोग हताहत हुए। घायलों को दुर्घटनास्थल से अस्पताल पहुंचाना उस समय साधनों के अभाव में बड़ा कठिन था, फिर भी उन्होंने राह से गुजरने वालें वाहनों व पुलिस की मदद से सभी घायलों को अस्पताल पहुंचाया और उनका त्वरित उपचार शुरु करवाया। दूसरी घटना उदयपुर के महाराणा भूपाल सार्वजनिक अस्पताल में भर्ती दूरदराज गांव के आदिवासी किसना जी भील को भूख के बावजूद एक रोटी खाकर तीन रोटियां अपने चार परिजनो के लिए तकिए के नीचे सहेजने की थी। अस्पताल में रोगियों को तो खाना मिलता था, लेकिन उनके साथ आए परिचारकों के भोजन की कोई व्यवस्था न थी। तभी पिताजी ने हर ऐसे परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था का संकल्प लिया और शहर से एक–एक मुट्ठी आटा इकट्ठा कर माता जी से उनकी रोटियां बनवा कर रोजाना आफिस जाने से पूर्व उन्हें अस्पताल पहुंचाने का क्रम शुरू किया, जो वर्षों तक चला। सेवा के इसी समर्पण – भाव ने 23 अक्टूबर 1985 को नारायण सेवा संस्थान का बीजारोपण किया, जो संवेदनशील सहयोगियों, दानदाताओं और भामाशाहों के निरन्तर सिंचन से वृहद् सेवा–वृक्ष बन चुका है, जिसकी शाखाएं– प्रशाखाएं देश की सीमाओं के पार भी पल्लवित हैं और लाखों दिव्यांग और जरूरतमंदों को छांव दे रही हैं।

धन से भौतिक संसाधन तो हासिल किए जा सकते हैं, लेकिन सन्तोष और शांति नहीं। भौतिकता की मृगतृष्णा लेकर भटकते रहना मनुष्य का उद्देश्य नहीं है, और न ही इसके लिए उसका जन्म हुआ है। जिसके पास शांति और सन्तोष है, वही समृद्धिशाली है। जो लोग अपने व परिवार के साथ–साथ पड़ोस, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करते हैं वे यशस्वी और स्मरणीय होते हैं। जीवन की सार्थकता सेवा और परोपकार में ही है।

परम श्रद्धेय गुरुदेव व गुरुमाता श्रीमती कमला देवी जी के सानिध्य, आपश्री के सहयोग व भगवान नारायण की कृपा से संस्थान 40वां सेवा वर्ष पूर्ण कर रहा है। सेवा, संकल्प और समर्पण की इस यात्रा में आपश्री के योगदान का सादर अभिनन्दन।

आप दानवीरों के सहयोग से 4.50 लाख से अधिक दिव्यांगजन की नि:शुल्क सर्जरी कर उन्हें पोलियों के दंश से राहत दी गई तो सड़क हादसों में अपने हाथ–पांव खो देने वाले 38000 भाई–बहिनों को कृत्रिम अंग उपलब्ध करवा उन्हें गतिमान रखा। 44 सामूहिक विवाह आयोजित कर 2510 निर्धन युवक–युवतियों की गृहस्थी बसाकर उनका सम्पूर्ण पुनर्वास किया गया। इसके अतिरिक्त दिव्यांग, निर्धन एवं मूक–बधिर बालकों की शिक्षा, चिकित्सा के साथ उन्हें खेल की अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु व माताओं के सुपोषण के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। यह सभी आपके दान–सहयोग व प्रभु कृपा से संभव हो पाया है। सेवा, समर्पण और संकल्प की इस यात्रा में आपका सम्बल और मार्गदर्शन मिलता रहे, इसी आशीष की कामना है।

जय नारायण।

सेवक प्रशान्त भैया

रंगत वही जो संगत बनाएं

जीत या सफलता सुनिश्चित करने का तरीका है–हार की संभावना समाप्त कर देना। सफलता की तैयारी का महत्वपूर्ण चरण है, उन कारणों को पहचानना और उनका खात्मा करना, जो सफलता के मार्ग में बाधक हैं। सफलता की रेखाएं उन्ही मनुष्यों के कपाल पर परिलक्षित होती हैं, जिनके हृदय में सकारात्मक विचारों का अंकुरण होता है। सतत् प्रयास, अवलोकन और अभ्यास सफलता के प्रमुख सूत्र तो हैं ही लेकिन इसमें सत्संग की बड़ी भूमिका है। हम जीवन में कितनी तरक्की करते हैं, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि हम किस प्रकार के लोगों अथवा वातावरण के बीच रहते हैं। हमारी संगति कैसी है। व्यक्ति की पहचान उसकी संगति से हो जाती है। हम जिस प्रकार के विचारों और प्रवृत्तियों के बीच रहेंगे, तो स्वाभाविक है कि हमारे व्यक्तित्व का निर्माण भी उसी प्रकार का होगा।

इस सम्बंध में महान चीनी विचारक मेन्जियस की जीवन यात्रा का प्रसंग स्मरण में आता है। जब वे छोटे थे, उनका परिवार जिस घर में रहता था। उसकी खिड़की कब्रिस्तान की ओर खुलती थी। वह प्रायः कब्रिस्तान में आने वालों को विलाप करते हुए देखता था, अतः वह भी गुमसुम और उदास रहने लगा। उनकी मां बुद्धिमान थी, वे जान गई कि बेटा ऐसा क्यों कर रहा है। उन्होंने कुछ समय बाद घर बदल कर अनाज मंडी के इलाके में ले लिया। मेन्जियस स्कूल से आने के बाद घर के बाहर बैठ मंडी के व्यापारियों– ग्राहकों के हाव–भाव देखता और उनकी नकल करके दोस्तों के बीच ठिठोली करने लगा। हालत यह हो गई कि वह अकेले में भी चीजों को दुकान की तरह फैलाकर खुद ही दुकानदार और खुद ही ग्राहक बनकर समय बिताने लगा। उसे ग्राहक और दुकानदार के बीच होने वालो विवाद में पढ़ाई की बजाय ज्यादा दिलचस्पी होने लगी। माँ व्याकुल हो उठी उसे वहां से भी तत्काल घर बदलना पड़ा। अब उसे ऐसी जगह मकान मिला, जो एक स्कूल के समीप था और आसपास कुछ शिक्षक भी रहते थे। कुछ दिनों बाद देखा कि उस पर शिक्षकों और विद्यार्थियों के रहन–सहन, शिष्टाचार का सकारात्मक असर हुआ। अब वह न केवल स्कूल जाने के लिए खुद उत्साह से तैयारी करता, वहां से आने के बाद पढ़ाई में भी ध्यान देता घर के किवांड़ के पृष्ठ भाग को ब्लैक बोर्ड की तरह इस्तेमाल कर उस पर नये–नये सूत्र और विचार लिखने लगा। इस बदलाव से मां बहुत खुश थी, मित्र और शिक्षक भी उसके विचार और व्यवाहर से प्रभावित थे। मेन्जियस के बड़ा होने पर उसकी गणना चीन के विद्वानों की अग्रिम पंक्ति में होने लगी। हमारे यहां कहा भी गया है कि जब स्वाति नक्षत्र की बूंद सीप में– समाती है तो वह मोती बनती है लेकिन सर्प के ग्रहण करने पर विष ही बनती है। जैसी संगत मिलेगी वैसा ही उसका परिणाम आएगा।

कमान उन्ही की हाथों में होती है, नेतृत्व वही करते हैं– जो अपने मार्ग का स्वयं निर्धारण करते हैं। इतिहास इसका साक्षी है। अंधानुकरण करने वाले कभी सफल नहीं हो सकते।

आप में भरपूर क्षमता है और कोशिशों में कोई कमी नहीं, फिर भी सफलता आपके हाथ से छिटक गई तो हार मानने की जरूरत नहीं है, एक बार फिर आत्म मंथन कीजिए कि कहीं उसके क्रियान्वयन में तो कोई चूक नहीं रह गई। बस जरूरत है ईमानदारी की, विश्लेषण करने और फिर उतनी ही सजगता और लगन से उस पर अमल करने की।

पूज्य श्री कैलाश 'मानव'

टूटे सपनों में बसी आशा– अमिता के आत्मनिर्भरता की कहानी

माता–पिता और परिजन भावुक होकर कहते हैं: संस्थान ने न केवल अमिता के जीवन में आशा और आत्मनिर्भरता की नई रोशनी भरी है, बल्कि हमारे पूरे परिवार को भी नया जीवन दिया है।

मध्य प्रदेश के सीधी जिले की 10 वर्षीय अमिता यादव जन्म से ही CP Spastic Hemiplegia (दाहिनी ओर पक्षाघात) जैसी गंभीर शारीरिक चुनौती का सामना कर रही थी। इस बीमारी के कारण उसके शरीर का दायां हिस्सा कमजोर हो गया था, जिससे चलना और रोजमर्रा के कार्य करना बेहद कठिन था।

दाएं हाथ–पैर में दिव्यांगता के कारण अमिता न केवल खेलकूद से दूर हो गई, बल्कि अपनी दैनिक जरूरतें पूरी करना भी उसके लिए एक बड़ा संघर्ष था। उसके पिता अखिलेश जी यादव ने इलाज के लिए हर संभव प्रयास किए, लेकिन बढ़ती उम्र के साथ–साथ तकलीफें भी बढ़ती जा रही थीं। लेकिन हार नहीं मानी। जब किसी परिचित से उन्हें नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में निःशुल्क सुधारात्मक सर्जरी और सेवा प्रकल्पों की जानकारी मिली, तो वे नई उम्मीद के साथ अमिता को लेकर संस्थान पहुंचे। यहाँ विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा जाँच और परामर्श के बाद 6 जुलाई 2025 को अमिता की सर्जरी की गई। 12 जुलाई को उसे डिस्चार्ज कर दिया गया। पुनः 13 अगस्त को फॉलोअप में डॉक्टरों ने उसके स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार देखा और विशेष हैंड–सपोर्ट और कैलिपर्स बनवाकर लगाए। अब अमिता पहले से कहीं बेहतर चलने–फिरने में सक्षम है। उसकी मुस्कान फिर से लौट आई है।

टूटती उम्मीदों के बीच ज्योति को मिली नई ज्योति

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के लालगंज की नन्ही ज्योति गौतम जन्म से ही दोनों पैरों के अंदर मुड़ने की गंभीर समस्या से जूझ रही थी। चलना तो दूर, वह ठीक से खड़ी भी नहीं हो पाती थी। बचपन के खेल–खिलौने और मासूम हंसी दर्द और मायूसी में बदल गए थे। संघर्ष और उपचार की शुरुआत– परिवार ने हर जगह इलाज करवाने की कोशिश की, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण सही उपचार नहीं मिल सका। तभी एक परिचित ने उन्हें उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान वहां से मिलने वाले निःशुल्क पोलियो सुधारात्मक उपचार के बारे में बताया। जनवरी 2024 में ज्योति को पहली बार संस्थान लाया गया और यहीं से उसकी जिंदगी बदलने का सफर शुरू हुआ। लगातार इलाज और सर्जरी – जनवरी 2024 से सितंबर 2024 तक ज्योति के कई ऑपरेशन हुए। हर ऑपरेशन के बाद उसके पैरों पर नए–नए कास्ट लगाए गए। डॉ. ओम दत्त माथुर और उनकी टीम ने धैर्य और निपूर्णता के साथ ज्योति के पैरों को धीरे–धीरे सीधा किया। पिता फूलचंद भावुक होकर कहते हैं – 'हर बार कास्ट बदलने और ऑपरेशन के बाद हमें उम्मीद की एक नई किरण मिलती थी।' बड़ा बदलाव – 9 सितंबर 2025 को ज्योति का अंतिम उपचार हुआ और उसे विशेष जूते पहनाए गए। अब वह अपने पैरों पर खड़ी होकर चलने की कोशिश कर रही है। उसके चेहरे की मुस्कान ही परिवार के लिए सबसे बड़ी राहत और उपलब्धि है। नई जिंदगी का आरंभपरिजन गर्व से कहते हैं – 'अब हमारी बेटी भी सामान्य बच्चों की तरह स्कूल जाएगी और खेल–कूद में हिस्सा लेगी। संस्थान ने हमें जो खुशियाँ दी हैं, उन्हें शब्दों में बयां नहीं कर सकते।' संस्थान ने न केवल ज्योति के पैरों को सीधा किया, बल्कि उसके सपनों को भी सीधा रास्ता दिया।

सपनों को पंख
रिश्तों को स्नेह का आकाश

44 वें सामूहिक विवाह में 51 जोड़ों के पीले हाथ

जीवन में जहाँ कठिनाइयाँ कदम रोक देती हैं, वहीं सेवा, सद्भाव, विश्वास और सहयोग से नए रास्ते बन जाते हैं। लियों का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ में संस्थान का दो दिवसीय 44वां निःशुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह 31 अगस्त को सम्पन्न हुआ। जिसमें 51 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे।

आस्था और आनंद का संगम - प्रथम दिन प्रातः 10:15 बजे पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव', सह संस्थापिका श्रीमती कमला देवी जी, अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी, निदेशक श्रीमती वंदना जी, सुश्री पलक जी अग्रवाल, महेश जी अग्रवाल, श्री जगदीश जी आर्य और श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने गणेश पूजन कर विवाह महोत्सव का शुभारंभ किया।

हल्दी-मेहंदी की रस्म - इसके बाद दुल्हनों की हल्दी और मेहंदी की रस्में हुईं। ढोलक की थाप पर 'हल्दी लगाओ रे तेल चढ़ाओ रे बन्नी का बदन चमकाओ रे' और 'आओ री सखियों मेहंदी लगा दो, मुझे श्याम सुंदर की दुल्हन बना दो' गीतों पर अतिथि खूब झूमे।

इस दौरान दुल्हनों की आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े। उन्होंने कहा – "यह दिन उस सपने जैसा है, जिसके साकार होने की उम्मीद भी न थी।"

सेवा से ही संवरते सपने- संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा–"जिन्होंने निःशक्तता और निर्धनता को अपनी नियति मान

लिया था, उनके पीले हाथ होना भामाशाहों और समाज की पहल का ही परिणाम है। संस्थान के माध्यम से पिछले 43 सामूहिक विवाहों में 2459 जोड़ों ने अपनी गृहस्थी बसाई।

रंगारंग संगीत संध्या- महिला संगीत की रंगारंग प्रस्तुतियों ने इस दिन की शाम के लम्हों को और भी यादगार बना दिया। दूल्हा–दुल्हनों ने भी गीतों पर खूब ठुमके लगाए। उनके परिजनों ने अपने–अपने अंचल के पारंपरिक विवाह गीत उकेर कर विवाहोत्सव को यादगार बना दिया।

सतरंगी सपने साकार -

सामूहिक विवाह के दूसरे दिन 31 अगस्त को वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पवित्र अग्नि की साक्षी में एक–दूसरे का हाथ थाम कर 25 दिव्यांग एवं 26 सकलांग जोड़ों ने उस सुहाने सफर पर कदम बढ़ाए जिसके सपने वे वर्षों से देख रहे थे। विवाह में ऐसे जोड़े भी सम्मिलित थे जिनमें वधू अथवा वर पैरों से दिव्यांग, कोई एक पैर से तो साथी हाथ से, एक दिव्यांग तो दूसरा दृष्टिबाधित, ऐसे भी जोड़े थे जो घुटनों के बल या घिसटकर चलते हैं, लेकिन अब ये सभी एक–दूसरे की ताकत और दृष्टि बनकर खुशनुमा गृहस्थी के सपनों को साकार करेंगे। इन जोड़ों में से अधिकतर की

दिव्यांगता सुधारात्मक निःशुल्क सर्जरी संस्थान में ही हुई यहीं इन्होंने आत्मनिर्भरता के लिए निःशुल्क सिलाई, मोबाइल सुधार और कंप्यूटर के कोर्स किए और जीवनसाथी की तलाश भी यहीं पूरी हुई।

बिंदोली व तोरण- प्रातः 10 बजे धूमधाम से निकली बिंदोली में दूल्हा–दुल्हन विवाह की पारंपरिक वेशभूषा में सजे–धजे थे। बिंदोली में सबसे आगे बैंड दस्ता था जबकि मध्य में ढोल की थाप पर झूमते बाराती – घराती और बड़ी संख्या में देश के विभिन्न राज्यों से आए अतिथि थे। उसके बाद भगवान श्रीनाथजी एवं अयोध्या के श्री रामलला की छवि के सानिध्य में दूल्हों ने क्रमवार तोरण रस्म का निर्वाह कर विवाह पांडाल में प्रवेश किया।

वरमाला- तोरण रस्म के पश्चात् पुष्प लड़ियों से सज्जित मंच पर दूल्हा–दुल्हनों ने संस्थान संस्थापक पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव' व गुरुमाता श्रीमती कमला देवी जी से आशीर्वाद लिया। इसके बाद संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया, निदेशक श्रीमती वंदना जी व सुश्री पलक जी की सहायता से दूल्हा–दुल्हन ने एक–दूसरे के गले में वरमाला डालकर हमसाया बनने की मौन स्वीकृति दी। इस दौरान उन पर गुलाब की पखुरियों की जमकर वर्षा हुई।

सात फेरे-सात वचन- नव युगल का पाणिग्रहण संस्कार वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पवित्र अग्नि की साक्षी में सात वचन–सात फेरों के साथ संपन्न हुआ। प्रत्येक वेदी पर एक आचार्य मौजूद थे। जिन्होंने मुख्य आचार्य के मार्गदर्शन में भव्य सामूहिक विवाह संपन्न करवाया। देश–विदेश से आए संस्थान सहयोगी, दूल्हा–दुल्हन के परिजन, कन्यादानी, भामाशाह, संस्थान की भारतभर में फैली शाखाओं के प्रभारी, संयोजक व प्रेरकों का इस विवाह को आशीर्वाद मिला।

पूर्व विवाहित जोड़ों का आशीष- समारोह में वे दिव्यांग जोड़े भी आए जिनका विवाह संस्थान के पूर्व सामूहिक विवाहों में ही हुआ। मुम्बई से आये दिव्यांग दंपति सचिन व पद्मा ने कहा कि उनका विवाह 2020 में हुआ। वे अपने एक बच्चे के साथ खुशहाल गृहस्थी का निर्वाह कर रहे हैं। इन जोड़ों ने बताया कि संस्थान के माध्यम से आज न केवल वे पैरों पर खड़े होकर आत्मनिर्भर हैं बल्कि अपनी खुशनुमा गृहस्थी के साथ बच्चों के सुखद भविष्य का ताना-बाना बुन रहे हैं।

उपहार- नई गृहस्थी बसाने के लिए सामान प्रदान किया गया। जिनमें बर्तन, गैस, चूल्हा, संदूक, क्राकरी, डिनर सेट, स्टील कोठी, पलंग, बिस्तर, पंखा, दीवार घड़ी सहित अन्य वस्तुएं थी। जबकि कन्यादानियों व अतिथियों की ओर से प्रत्येक जोड़े को मंगलसूत्र, चूड़ियां, चैन, कर्णफूल, नाक की बाली, बिछिया, पायल, अंगूठी व सौंदर्य प्रसाधन सामग्री उपहार स्वरूप प्रदान की गई।

नृत्य नाटिकाएं – समारोह में वैवाहिक गीतों के बीच शिव- पार्वती एवं कृष्ण-रुक्मणी विवाह नृत्य नाटिका की प्रस्तुति आकर्षण का विशेष केन्द्र रहीं।

हस्तशिल्प- विवाह स्थल पर नारायण आवासीय विद्यालय के मूकबधिर बालकों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प स्टॉल से अतिथियों ने कलात्मक चीजों की खरीददारी कर बच्चों को प्रोत्साहित भी किया।

मार्मिक विदाई- विवाह के बाद बेटियों को प्रतीकात्मक रूप से डोली में बिठाकर दूल्हे व उनके परिजनों के साथ विवाह प्रांगण से विदाई दी गई। संस्थान परिवार ने सजल नेत्रों से उन्हें विदा किया। इस दौरान दृश्य अत्यंत संवेदनशील व मार्मिक था।

दिव्यांग
विवाह

दिव्यांग विवाह

सिलाई से बुनी नई पहचान–आत्मनिर्भरता से बने रिश्ते

"सामने ढेरों चुनौतियां थीं। उपेक्षा, अनिश्चित भविष्य और गरीबी। लेकिन हिम्मत नहीं हारी। आज मैं अपने पांवों पर खड़ी भी हूं और आत्मनिर्भर भी हूँ।" यह कहना है 'नारायण सेवा संस्थान के सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में कार्यरत निकिता सहदेव (25) का जिन्होंने 44 वें सामूहिक विवाह में दिव्यांग देवेन्द्र कुमार को अपना जीवन साथी बनाया।

म.प्र के सागर निवासी देवेंद्र भी एक पांव से पोलियो ग्रस्त हैं और संस्थान में ही ऑपरेशन और प्रशिक्षण के बाद 7 वर्ष से सिलाई केन्द्र में काम कर रहें हैं। यहीं उनका निकिता से दिल का रिश्ता बना।

उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद की निकिता के जन्म पर श्रमिक पिता वीरेश व माता प्रवेश देवी काफी खुश थे। पांच जनों का परिवार पिता की मजदूरी पर ही आश्रित था। तीन साल की उम्र में निकिता बुखार से ग्रस्त हुई और उपचार के दौरान ही दोनों पांवों को पोलियो ने चपेट में ले लिया। कुछ समय तक पता भी न चल पाया कि हुआ क्या है, उठना–बैठना कम हो रहा था, पांव कमजोर होते जा रहे थे। डाक्टरों ने कहीं इसे लाइलाज बताया तो किसी अस्पताल का खर्च इतना था कि वहन करना परिवार के बूते से बाहर था। उम्र बढ़ने के साथ हड्डियों में विकार बढ़ रहा था। लड़की की इस हालत से आसपास परिवारों की उपेक्षा और तानों से माता–पिता का दिल छलनी था। वर्ष 2017 में परिवार को नारायण सेवा संस्थान में निःशुल्क इलाज की जानकारी मिलने पर उदयपुर आए। यहां डॉक्टरों ने जांच कर दोनों पांवों के बारी–बारी ऑपरेशन किए। बाद में विशेष कैलिपर्स तैयार करवाए। संस्थान में ही सिलाई का निःशुल्क प्रशिक्षण लिया। संस्थान ने पारिवारिक हालातों के मद्देनजर यहीं इन्हें रोजगार से भी जोड़ दिया।

इशारे बुनेंगे सतरंगी सपने

नीमच (मध्य प्रदेश) की 24 वर्षीय आरती कामलिया जन्मजात मूकबधिर हैं। न सुन सकती हैं और न बोल सकती हैं, उनकी सांकेतिक भाषा ही उनके मन की भावनाएं व्यक्त करती हैं। वर्तमान में 10वीं कक्षा में पढ़ाई कर रही आरती घर के सभी कामों में निपुण हैं। पिता को खोने के बाद वह अपनी मां और भाई के साथ रहती हैं। इनका विवाह उदयपुर के गजेंद्र सिंह चौहान (27) के साथ सम्पन्न हुआ। गजेंद्र भी जन्म से मूक बधिर हैं और सांकेतिक भाषा के माध्यम से ही संवाद करते हुए कपड़े की दुकान पर कार्यरत हैं।

ये जोड़ी इस बात की मिसाल है कि सच्चा रिश्ता भाषा या शब्दों का मोहताज नहीं होता, बल्कि समझ और विश्वास से पल्लवित होता है। आरती और गजेंद्र इशारों–इशारों में एक–दूसरे के जीवन में खुशियों के रंग भरेंगे।

संस्थान की सेवा–समाज की मुस्कान

जिन दिव्यांगजन के हाथ लिख नहीं सकते थे, जो पांव बढ़ नहीं सकते थे, वह आज संस्थान में उच्च तकनीक से निर्मित कृत्रिम अंग–कैलिपर्स पाकर लिख रहे हैं और रुके हुए कदम निरंतर बढ़ रहे हैं। हादसों में हाथ–पैर गवां देने वाले ऐसे ही 1165 दिव्यांगजन को गत दिनों रायपुर व हैदराबाद शिविर में नि:शुल्क कृत्रिम अंग प्रदान किए गए।

रायपुर (छत्तीसगढ़): विशाल नगर स्थित शगुन फार्म में 24 अगस्त को संपन्न फिटमेंट शिविर में 500 दिव्यांगजन की उपस्थिति रही। जिनमें से 382 को कृत्रिम अंग व कैलिपर लगाए गए। मुख्य अतिथि राज्य के उपमुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने कहा कि जब परिवार का कोई एक सदस्य अनायास हादसे का शिकार हो जाता है तो पूरा परिवार ही असहाय हो जाता है। जब वही सदस्य फिर से अपने पांव पर खड़ा होता है तो पूरा परिवार पुष्प की मानिंद खिल उठता है। विशिष्ट अतिथि राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष श्री अमरजीत सिंह छाबड़ा थे। संस्थान संरक्षक महेश जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत – अभिनंदन किया।

हैदराबादः चंपापेट के मिनर्वा गार्डन में 17 अगस्त को आयोजित शिविर में तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों से आए 1100 दिव्यांगजन में से 783 को 851 कृत्रिम अंग और कैलिपर लगाए गए। शिविर को राष्ट्रसंत श्री ललित प्रभ सागर महाराज एवं आचार्य भक्तिरत्न सूरीश्वर जी महाराज का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री ललितप्रभ सागर जी ने आशीर्वचन में कहा कि नारायण सेवा संस्थान न केवल दिव्यांगजन को निःशुल्क कृत्रिम अंग और चिकित्सा उपलब्ध करवा रहा है, अपितु उनके खोए आत्मविश्वास को भी पुनः संचरित कर रहा है। जेसीआई जोन प्रेसिडेंट श्री चतुर्वेदी वतुकुरु, जेसीआई श्री बंजारा, श्री सुरेश मसानी ने दीप प्रज्वलन कर शिविर का शुभारंभ किया। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। जबकि ट्रस्टी निदेशक श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों व लाभार्थियों की जानकारी दी। शिविर में संस्थान संरक्षक श्री महेश जी अग्रवाल, पिरामिड संस्थान की श्रीमती माधवी दंतरिका, शाखा संयोजक श्रीमती अलका जी चौधरी, श्री अभय जी चौधरी, श्री रोहित जी तिवारी, श्री भगवान प्रसाद जी गौड़, आश्रम प्रभारी श्री महेंद्र सिंह जी राव भी उपस्थित थे।

अंधेरे से सतत् संघर्ष का पर्व दीवाली

दीपावली के पांच दिवसीय उत्सव की मूल अवधारणा ही यह है कि भगवान धन्वंतरि की कृपा से हम स्वास्थ्य और देवी लक्ष्मी की कृपा से भौतिक समृद्धि को प्राप्त करें। साथ ही जो लोग दीन-दु:खी और असहाय हैं, उनके जीवन से अंधेरा हटाने में मदद कर, उन्हें रोशनी का उपहार दें।

धनतेरस : सेहत को लेकर जागरूक बनें

देव–दानव द्वारा समुद्र मंथन के दौरान कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन भगवान धन्वंतरि हाथों में औषधि कलश लेकर समुद्र से प्रकट हुए थे। वे ही आयुर्वेद के जनक हैं। जब समुद्र मंथन में हलाहल विष निकला तो भगवान शिव ने उसे पीकर कंठ में रोक लिया था। तब धन्वंतरि ने ही भगवान शिव को अमृत पान करवाया था। इस दिन भगवान धन्वंतरी के स्वागत में दीपक जलाए जाते हैं। यह दिन हमें बताता है कि सेहत ही सबसे बड़ा धन है। इस दिन नई चीजों की खरीद व निवेश का भी प्रचलन है।

नरक चतुर्दशी : मन को स्वच्छ रखें

द्वापर युग में नरकासुर का वध कर श्रीकृष्ण ने 16 हजार 100 स्त्रियों को उसकी कैद से मुक्त करवाया था। भगवान ने उन्हें रूपवती होने का आशीर्वाद दिया था। उन स्त्रियों ने जब भगवान से खुद को पत्नी के रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की तो भगवान ने मान लिया था। यह घटना कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को हुई थी। इसी घटना से नरक चतुर्दशी (रूप चौदस या छोटी दीपावली) मनाने का प्रचलन हुआ। यह श्रीकृष्ण की पूजा का खास दिन है। यह संदेश देता है कि मन को सदा निर्मल रखें और निर्बल की सहायता करें। ऐसा होने पर भगवान सहज सहायक होते हैं।

दीपावली : वैभव प्राप्ति

त्रेता युग में रावण वध के बाद भगवान राम, पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ अपना वनवास समाप्त कर पुनः अयोध्या लौटे तो उनके स्वागत में उनके भाइयों भरत–शत्रुघ्न व माताओं सहित अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए थे। तब से यह दिन, त्योहार के रूप में प्रचलित हुआ। यह ऐतिहासिक घटना कार्तिक मास की अमावस्या को हुई थी। इस दिन घरों व मंदिरों में दीपक जलाए जाते हैं। चूंकि श्रीगणेश प्रथम पूज्य हैं और भगवान के आगमन पर अपार वैभव की वृष्टि हुई थी, इसलिए इस दिन गणेश–लक्ष्मी की पूजा भी की जाती है। यह पर्व संदेश देता है कि विपत्ति में घबराएं नहीं।

गोवर्धन पूजा - अन्नकूट : अहंकार त्यागने का अवसर

द्वापर में इंद्र ने कुपित होकर जब मूसलाधार बारिश की तो श्रीकृष्ण ने गोकुलवासियों व गायों की रक्षार्थ और इंद्र का अभिमान ध्वस्त करने के लिए गोवर्धन पर्वत, छोटी अंगुली पर उठा कर उसके नीचे गोकुल के लोगों और गो–धन को संरक्षण दिया था। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के पहले दिन (पड़वा को) हुई इस घटना में इंद्र का अहंकार टूटा। उन्होंने भगवान से माफी मांगी। इस दिन गाय के गोबर से गोवर्धनजी बनाकर उनकी पूजा की जाती है। यह पर्व बताता है कि अहंकार ठीक नहीं है, वह टूटता ही है। इस पर्व पर श्रीकृष्ण को 56 प्रकार के व्यंजन का भोग लगाया जाकर, प्रसाद बांटा जाता है। गायों की पूजा कर उन्हें गुड़–चावल खिलाया जाता है।

भाईदूज : सुरक्षा का संकल्प

दीपोत्सव के पांचवें और अंतिम दिन को भाईदूज या यम द्वितीया के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि सूर्यपुत्री यमुना के भाई यमराज कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को उनके घर पधारे थे। यमुना ने यमराज को टीका लगाकर वरदान मांगा था कि इस दिन कोई बहन अपने भाई को टीका लगाकर उसका आदर–सत्कार करे तो उसे आपका भय न रहे। यमराज ने तथास्तु कहा। तब से यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन बहनें, भाइयों की लम्बी उम्र व उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्रत रखती हैं। भाई, रक्षा का संकल्प लेते हैं। इस दिन भाई अपनी बहिनों से तिलक लगवाकर उन्हें सुरक्षा का वचन और भेंट देते हैं। यह पर्व बताता है कि आप किसी का सत्कार करेंगे तो कुशलता का आशीर्वाद मिलेगा ही।

झीनी-झीनी रोशनी - 77

सन् 1983–84 का कालखंड। मेवाड़ की राजमाता ने सर्वऋतु विलास स्थित अपनी कुछ अमूल्य भूमि शांतिकुंज हरिद्वार को दान कर दी थी। श्री कैलाश जी शांतिकुंज में प्रशिक्षित थे तथा स्थानीय गायत्री परिवार ट्रस्ट के ट्रस्टी भी थे। नगर के प्रमुख स्थल पर भूमि मिल गई तो इसके उपयोग हेतु योजनाएं बनाने व धन संग्रह की चुनौती ट्रस्ट के समक्ष ही थी। कैलाश जी को ट्रस्ट का सचिव बना दिया गया, एक अन्य ट्रस्टी लक्ष्मीलाल जी अग्रवाल का निवास सर्वऋतु विलास में ही था। ट्रस्ट की बैठकें उनके घर पर होने लगीं और भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श का सिलसिला शुरू हो गया।

धन संग्रह का कार्य शुरू हो गया, कैलाश जी ने इसमें अपार उत्साह से भाग लिया। लोग भी उदारता से दान देने लगे तो शीघ्र ही जमीन के चारों तरफ बाउन्ड्री वाल खड़ी कर दी गई। कैलाश जी जहां–जहां यज्ञ करवाते थे, वहां जो भी दक्षिणा आती उसकी रसीदें गायत्री परिवार ट्रस्ट की काट दी जाती और पैसा इस कार्य में उपयोग कर लिया जाता। धीरे–धीरे लोगों की भावनाएं बढ़ने लगी, धन संग्रह आसानी से होता रहा, लोग बढ़–चढ़ कर दान करने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजमाता द्वारा प्रदत्त भूमि पर मन्दिर, हॉल, कमरे आदि के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो गया। इन्हीं दिनों कैलाश जी का सिरोही जिले के एक गांव में जाना हुआ। वहां एक जैन मन्दिर के निर्माण हेतु बोलियां लगाई जा रही थी। गांव के दो–तीन लोग विदेशों में रहते थे। इन्होंने अपनी प्रतिभा और कौशल से अपार सम्पदा अर्जित कर ली थी। इन्होंने मंदिर के कलश की बोली ढाई करोड़ रू. की लगा दी। कैलाश जी यह देख दंग रह गए, समाज के कार्यों हेतु चन्दा एकत्र करते समय लोगों से हजारों तक की राशि लिखाने में पसीना आ जाता था, मगर यहां हजार क्या, लाखों तक को छोड़ सीधे करोड़ों का चन्दा बोला जा रहा था। गांव के कई धन्ना सेठ ऐसे भी थे जिन्होंने कलश हेतु लाखों की बोलियां लगाई थी मगर उनकी करोड़ों की बिसात नहीं होने के कारण वे बोली आगे नहीं लगा सके थे। ये सब बोली किसी अन्य के नाम पर छूट जाने से निराश थे। यह भी कम अचरज की बात नहीं थी कि ढेर सारे लोग लाखों देने को तत्पर थे मगर पैसा किसी एक या दो से ही लिया जा रहा था। कैलाशजी के मन में एक सवाल सहजता से उठने लगा – काश! इन तमाम बोली लगाने वालों का पैसा लेकर कोई अच्छा कार्य किया जा सकता।

कैलाश जी यह सोच ही रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि ऊंची बोली नहीं लगा पाने वाले सभी लोग अलग से मंत्रणा करने लगे। ये सब चाहते थे कि उनके धन का भी उपयोग हो, इसके लिये वे एक अलग मन्दिर बनाने और उसमें अपना पैसा लगाने की बात करने लगे। दान देने के नाम पर ही गुटबाजी हो गई। अचानक अच्छा भला सहयोग व सद्भाव का माहौल पारस्परिक तनाव में परिवर्तित हो गया।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली

श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा

श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001

बहरोड़

डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)

श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर

श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर

जयपुर

श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्कलेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर

श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर

बूंदी

श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग

श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग

रामगढ़

श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीटयूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद

श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम

श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर

श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, रामदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर

भोपाल

श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रॉसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड जिला – भोपाल

बखतगढ़

श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 06989609714, बखतगढ़, त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला

श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी

श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343

नांदेड़

श्री विनोद लिंबा राठोड़,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़

पाचोरा

श्री सीताराम जी
मो. 09422775375

मुम्बई

श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708,
10–बीच्वी, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई

भायंदर

श्री कमलचंद लोढ़ा,
मो. 8080083656 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर

श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट–बिघरी, त. बदसर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल

डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी

श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद

पलवल

श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल

फरीदाबाद

श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल

डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001

अम्बाला

श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001

नरवाना

श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा

श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद

श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रू बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली

श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला–बरेली

श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली

हाथरस

श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद

हापुड़

श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस, कबाड़ी बाजार, हापुड़

गजरौला, अमरोहा

श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा

श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा

बिलासपुर

डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद

श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू

श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरु आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मू–180001

दिल्ली

शाहदरा

श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
एक्स1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई
मो. 09529920090,07073452174
09529920088 फ्लेट नं. 5/ई सुनील कुमार डोकानिया, न्यु ओस्वाल ओनिक्स, जैसल पार्क, भायन्दर ईस्ट थाने, 401105

पूणें
मो. 09529920093
17/153 मेन रोड़, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे–16

दिल्ली

रोहिणी
मो. 08588835718, 08588835719,
बी–4/232 शिव शक्ति मंदिर के पास, सेक्टर–8
रोहिणी, दिल्ली–110085

जनकपुरी, नई दिल्ली
07023101156, 07023101167
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली
मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

हरियाणा

गुरूग्राम
मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी. आर.पी.एफ. केम्प चौक,
गुरुग्राम – 122001

हिसार
मो. 9257017593, मकान न. 2249, सेक्टर–14, हिसार 125005

(कर्नाटक)

बेंगलुरू
मो. 09341200200,
नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुडी, बेंगलुरु–560004

बिहार

पटना
मो. 7412060405
मकान नं.–23, किताब भवन रोड़ नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

उत्तर प्रदेश

मेरठ
मो. 08306004811
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड़, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ
मो. 09351230395,09351230393
फ्लेट नम्बर 202, गुरुकृपा अपार्टमेंट न्यू श्रीनगर आलमबाग
लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

पंजाब

लुधियाना
मो. 07023101153
381/382, बी–17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़
मो. 07073452176, 08949621058
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर – 46–सी, चंडीगढ़–160047

वेस्ट बंगाल

कोलकाता
09529920097, मकान नं.– 216, बांगुर एवेन्यु, ब्लॉक–बी, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
पिन कोड–700055

गुजरात

सूरत
मो. 09529920082
27, सम्राट टाउनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा
मो. 09529920081
म. नं.रू 1298, वैकुंठ समाज, श्री अम्बे स्कूल के पास, वाघोडिया रोड़, वडोदरा –390019

अहमदाबाद
मो. 09529920080, 08306008208
7/ए कपील कुंज सोसायटी विजय नगर के पास, मेट्रो स्टेशन नारंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) 380016

राजस्थान

जोधपुर
मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा
मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2–बी–5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

नारायण नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस
मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड़, हाथरस

मथुरा
मो. 07073474438
मकान नं. 212/53, राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी आवास बिल्डिंग, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़
मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद
मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन निःशुल्क फिजियोथेरपी सेंटर, बी.–350 न्यू पंचवटी कॉलोनी,
गाजियाबाद – 201009

लोनी
मो. 07023101163
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा
मो. 07023101174
मकान न. 8/153, ई–3, न्यू लॉयर कॉलोनी, पानी की टंकी के पीछे, आगरा (उत्तर प्रदेश)

छत्तीसगढ़

रायपुर
मो. 07869916950
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी टावर रोड़, गली नं.–2, फेस–2 श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर रायपुर, (छ.ग.)

गुजरात

राजकोट
मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड़, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून
मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कांवरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड़, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी
मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा
बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

मध्य प्रदेश

इन्दौर
मो. 09529920087
12, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड़, इंदौर–452018

हरियाणा

अम्बाला
मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाउसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल
मो. 08696002432,7023101166
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर
मो. 09529920089
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद
मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122/123 इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजनध्नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,0000 रू.	50,0000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

नारायण महावीर
प्राकृतिक
चिकित्सालय
प्राकृतिक चिकित्सा से नई शुरूआत
संदीप जायसवाल (पटियाला):
घुटनों का दर्द, शुगर और पेट की समस्या से परेशान थे। योग, डिटॉक्स और संतुलित भोजन से न सिर्फ दर्द और बीमारियों से राहत मिली, बल्कि 5 किलो वजन भी घटाया।
अनिल कुमार (कानपुर):
दो साल से खांसी, सांस की तकलीफ और स्पाइन दर्द झेल रहे थे। नारायण सेवा संस्थान में 10 दिन की नेचुरोपैथी थेरेपी के बाद 50% तक लाभ मिला और अब पहले से ज्यादा सक्रिय महसूस कर रहे हैं। दोनों की कहानी बताती है कि प्राकृतिक चिकित्सा और जीवनशैली में बदलाव से सेहत और जीवन दोनों बेहतर हो सकते हैं।
एक बार अवश्य पधारें
+91-294-6622222
www.narayanseva.org

सपनों को मिले नए पंख

अधिकारपूर्ण एवं सशक्त जिन्दगी
के साथ मुस्कान लौटाएँ...
दिव्यांगों के जीवन को रोशन करें...

10,000/-
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

Seva Soubhagya Print Date 1 October, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages-24 (No. of copies printed 1,50,000) cost-Rs.5/-